तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मंगलाचरण

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

मतिज्ञान के दूसरे नाम

मति:स्मृति:संज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥

अर्थ – [मति] मति, [स्मृतिः] स्मृति, [संज्ञा] संज्ञा, [चिंता] चिन्ता, [अभिनिबोध] अभिनिबोध, [इति] इत्यादि, [अनर्थांतरम्] अन्य पदार्थ नहीं हैं, अर्थात् वे मतिज्ञान के नामान्तर हैं।

मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥

अर्थ - [इन्द्रियानिन्द्रिय] इन्द्रियाँ और मन [तत्] उस मतिज्ञान के [निमित्तम्] निमित्त हैं।

अध्याय १: सूत्र १४ - मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥ - इन्द्रिय ओर मन का स्वरूप

इन्द्रिय – आत्मा, (इन्द्र = आत्मा) परम ऐश्वर्यरूप प्रवर्तमान है, इस प्रकार अनुमान करानेवाला शरीर का चिह्न।

नो इन्द्रिय – मन; जो सूक्ष्म पुद्‌गलस्कन्ध मनोवर्गणा के नाम से पहिचाने जाते हैं, उनसे बने हुए शरीर का आन्तरिक अङ्ग, जो कि अष्ट दल कमल के आकार हृदयस्थान में हैं।

अध्याय १: सूत्र १४ - मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥ - उपादान - निमित्त की व्यवस्था

- मतिज्ञान -- प्रत्यक्षज्ञान -- स्व सम्बन्धी स्वानुभवसहित ज्ञान [स्वानुभव के काल में]
  - उपादान कारण
    - आत्मा -- स्वद्रव्य
    - निश्चय कारण -- आत्मा की सहज शक्ति
  - निमित्त कारण
    - -
    - -

अध्याय १: सूत्र १४ - मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥ - उपादान - निमित्त की व्यवस्था

- मतिज्ञान -- परोक्षज्ञान -- पर पदार्थ सम्बन्धी ज्ञान
  - उपादान कारण
    - आत्मा -- स्वद्रव्य
    - निश्चय कारण -- आत्मा की सहज शक्ति
  - निमित्त कारण
    - इन्द्रियाँ ओर मन -- परद्रव्य
    - व्यवहार कारण -- संयोगरूप आरोपित कारण

अध्याय १: सूत्र १४ - मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥ - इन्द्रिय ओर मन का निमित्तपना

- मतिज्ञान -- परोक्षज्ञान -- पर पदार्थ सम्बन्धी ज्ञान के निमित्त
  - इन्द्रियाँ
    - स्पर्श , रस , गन्ध , वर्ण [रूपी] को जानने में निमित्त है
    - आत्मा रूपी नहीं है -- इसलिए स्वलक्ष्य में इन्द्रियाँ निमित्त नहीं है
  - मन
    - अनेक विकल्पों में निमित्त है
    - आत्मा विकल्पात्मक नहीं है -- इसलिए स्वलक्ष्य में मन निमित्त नहीं है

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १४

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १५

मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥

अर्थ - [अवग्रह ईहा अवाय धारणाः] अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा, यह चार भेद हैं।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - अवग्रह का स्वरूप

अवग्रह (Perception) – चेतना में जो थोड़ा विशेषाकार भासित होने लगता है, उस ज्ञान को 'अवग्रह' कहते हैं। विषय और विषयी (विषय करनेवाले) के योग्य स्थान में आ जाने के बाद होनेवाला आद्यग्रहण अवग्रह है। स्व और पर दोनों का (जिस समय जो विषय हो उसका) पहिले अवग्रह होता है।

अवग्रहेहावायधारणा: ॥ १५ ॥ - ईहा का स्वरूप

ईहा (Conception) – अवग्रह के द्वारा जाने गए पदार्थ को विशेषरूप से जानने की चेष्टा (आकाँक्षा) को ईहा कहते हैं।

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - अवाय का स्वरूप

अवाय (Judgement) – विशेष चिह्न देखने से उसका निश्चय हो जाए, सो अवाय है।

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - धारणा का स्वरूप

धारणा (Retention) – अवाय से निर्णीत पदार्थ को कालान्तर में न भूलना, सो धारणा है।

जिनवाणी स्तुति